भारत विकास परिषद के स्थापना दिवस पर पर्यावरण संगोष्ठी एवं पौधारोपण संपन्न

राजेन्द्र चतुर्वेदी

छोटीसादड़ी 10 जुलाई। भारत विकास परिषद के स्थापना दिवस पर आज। संगोष्ठी का शुभारंभ राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम एवं सरस्वती एवं भारत माता की तस्वीर पर दीप प्रज्वलित तथा पूजा अर्चना के साथ आरंभ हुआ । वन संरक्षण पर्यावरण प्रदूषण रोकने एवं वनों के विकास और सामाजिक संगठनों एवं आम जनमानस में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता एवं भविष्य में इनके प्रभाव यथा घटने वन बढ़ती आबादी विषय पर एक जिला स्तरिय संगोष्ठी एवं पत्र वाचन कार्य म हुआ तथा संगोष्ठी के पश्चात नव निर्माण राजकीय कॉलेज के मुख्य द्वार के आसपास वृक्षारोपण का आयोजन डी.एफ.ओ डॉ सुनील कुमार जाट के मुख्य आतिथ्य एवं भारत विकास परिषद के जिला अध्यक्ष जगन्नाथ सोलंकी की अध्यक्षता एवं पूर्व नगर अध्यक्ष नरेंद नरेडी, डॉ बृजेश प्रयानी एवं डां.सावन कुमार जांगिड़ प्राचार्य के आतिथ्य में संपन्न हुआ । पर्यावरण संगोष्ठी के मुख्य वक्ता डॉ. सुनिल कुमार जाट डी.एफ.ओ प्रतापगढ़ ,डॉ.सावन कुमार जांगिड़ प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय, डॉ. दीपक मंडेला प्राचार्य हरीश आंजना स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अश्वनी कुमार वनाअधिकारी छोटीसादड़ी थे । मुख्य अतिथि डॉ. जाट ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में वनों के संरक्षण, विकास एवं आने वाली चुनौतियों तथा राजस्थान सरकार के नवाचार से आठ प्रकार के औषधिय पौधे गिलोय अश्वगंधा आदि पौधे वितरण की व्यापक योजना का क्रियान्वयन सामाजिक धार्मिक अन्य संस्थाओं के सहयोग से करने एवं लगाए गए पौधों के जीवित रखने का संकल्प व्यक्त करते हुए अपना पत्र वाचन किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में सोलंकी ने कहा कि भारत विकास परिषद की स्थापना 10 जुलाई 1963 को दिल्ली में डॉक्टर सूर्य प्रकाश जी की अध्यक्षता में हुई थी तब से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह एक भारत के सर्वांगीण विकास के संकल्प और इसके 5 सोपान संपर्क, सहयोग, सेवा, संस्कार एवं समर्पण के आधार पर समग्र विकास के कार्य कर रही है। संगोष्ठी में वार्ता कार डॉ. सावन जांगिड़ ने कहा कि वनों के सरक्षण से ही मानव जाति को सुरक्षित रखा जा सकता है। आज हमारा देश पर्यावरण प्रदूषित की समस्या से ग्रसित है हवा पानी, रेत, मिट्टी, पेड़-पौधे खेती-बाड़ी, जीव जंतु एवं मानव सभी प्रभावित हो रहे हैं । विज्ञान के क्षेत्र में और असीमित प्रगति आणविक विस्पोट से रेडियो धर्मिता का अनुवांशिक प्रभाव पड़ रहा है । औद्योगिकरण से वाहनों से खदानों से प्राकृतिक संसाधनों से लगातार दोहन हो रहा है। घटते वन और बढ़ती आबादी आदि से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है तापमान का लगातार बढ़ना, भूस्खलन, वर्षा कम होना आदि दुष्प्रभाव परिलक्षित हो रहे हैं। डॉ. दीपक मंडेला ने कहा की पूर्वजों एवं ऋषि-मुनियों की देन वनों से प्राप्त औषधीय पौधे एवं जड़ी बूटियों से असाध्य बीमारियों का इलाज होता है । अतः इनके संरक्षण की महती आवश्यकता है। भारत विकास परिषद पदाधिकारी श्री मार्तण्ड राव मराठा, शांतिलाल उपाध्याय, रमेश पारीक, विमल वया, प्रोफेसर प्रवीण जोशी , प्रोफेसर सुनील ,प्रोफेसर सुमन, आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का संचालन प्रोफेसर प्रवीण कुमार जोशी ने किया। इस अवसर पर परिषद के पूर्व अध्यक्ष एवं भामाशाह श्री नरेन्द्र नरेडी ने लगाए गए नीम के वृक्षों की सुरक्षा के लिए टी गार्ड देने की घोषणा की इस अवसर पर हरीश आंजना स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अजय कुमार यादव,चौथमल,नितेश,राजकीय महाविद्यालय का स्टाफ एवं वनपाल,वनरक्षक,आदि उपस्थित थे।